❑कथा

वैताल पचीसी री अकवीसमी कथा

उल्थाकार : देईदान नाइता

उल्थाकार परिचै

'वैताल पचीसी' चावै संस्कृत कथा-ग्रंथ 'वेताल पंचविंशतिका' रौ राजस्थानी उल्थौ है। इणरौ उल्थौ बीकानेर महाराजा करणसिंह रै राज्यकाळ मांय होयौ अर युवराज अनूपसिंह रै कैवण सूं होयौ। युवराज अनूपसिंह देईदान नाइता नैं बुलायनै इण काम सारू हुकम दियौ हौ, जिणरौ जिकर इण भासा-टीका रै सरू में ई करीज्यौ है। बियां अेक पद्य सूं आ बात ई साम्हीं आवै कै अनूपसिंह री आग्या सूं देईदान अेक दूजै संस्कृत कथा-ग्रंथ 'सिंहासन-द्वात्रिंशिका' रौ उल्थौ ई कर्‌यौ हौ।

देईदान नाइता रै जलम अर जीवण बाबत कीं खास जाणकारी कोनी मिळै। पण युवराज अनूपसिंह, जिका बाद में बीकानेर रा महाराजा बण्या, वांरौ रौ जलम 11 मार्च 1638, राजतिलक 1669 में अर सुरगवास 7 मार्च, 1671 नैं होयौ, सो उल्थाकार देईदान नाइता रौ जलम अर रचनाकाळ ईस्वी 17वीं सदी मान्यौ जाय सकै। उल्था सूं आ बात साफ है कै देईदान कवि ई हा, क्यूंकै औ उल्थौ कविता-मिश्रित गद्य में है। साथै ई वै भासा रा कुसळ अधिकारी अर पारखी ई हा। इण उल्था री भासा में संस्कृत रा तत्सम, तद्‌भव अर देसज सबदां रै साथै ई चालू अरबी-फारसी रा सबदां रौ अेकदम सुभाविक प्रयोग होयौ है। उल्थाकार सबद-रूप विभक्ति अर क्रिया आद में भासा रै सरूप री रिछ्या करता थकां उणनैं सरल, सरस, आदर्श अर आकर्षक रूप देवण रा जतन कर्‌या है।

पाठ परिचै

'वैताल पचीसी' री इण इक्कीसवीं कथा मांय विस्णु स्वामी नांव रै अेक बामण रै चार बेटां री कहाणी है, जिका गळत रस्तै पड़्योड़ा हा अर बाप रै सीख दियां पछै वाराणसी विद्या प्राप्त करण नै गया। वै च्यारूं वाराणसी मांय रैयनै विद्या हासल करी अर पछै आपरै घरै बावड़ण लाग्या। मारग मांय वै आपरी विद्यावां रौ उपयोग करता थकां अेक सिंघ नैं जीवाय देवै। सिंघ जींवतौ होवतां ई वां च्यारूं नैं आपरौ भख बणाय लेवै। सो विद्या सीख लेवण सूं ई कोई बुद्धिमान नीं होय जावै। विद्यावां सीखनै वै मूरख हा, जिका औ ई नीं सोच सक्या कै सिंघ जीवतौ होवतां ई उणां नैं गटकाय जावैला। कैवण रौ मतळब औ कै विद्या नैं समै माथै उपयोग लेवण सारू बुद्धि होवणी ई जरूरी है।

वैताल पचीसी री अकवीसमी कथा

फिर मडै नुं ले आवतां वैताल कहै छै। राजा सांभळि।

पवनस्थान नगर। तीयै रो धणी बीरबल राजा। तीयै रइ विष्णुस्वांमि ब्राह्मण। तीयै रइ च्यारि पुत्र। एक द्युतकारी। बीजो वेश्यारत। तीजो सुरापांन। चोथो परस्त्रीरत। तीयां नुं विष्णुस्वांमि सीख दयै छै।

जुवारी नुं कहै छै—

दूहा

अति अनर्थ जुवौ करइ, शील धर्म न रहाइ।
जइसइ मांनवलोक कौ, विष पीयै जीव जाइ।।1।।
जुवारी लिषमी तजै, ज्युं वैश्या धन हीन।
कूड़ कपट कर्कस चवै, हास्यो दीसै दीन।।2।।
जूवै दोष घणा कह्या, वेचै त्रीय घर बार।
उत्तम होइ न षेल ही, अधम एह आचार।।3।।

अथ वेश्यारत नुं सीष दीयै छइ—

दूहा

साच सील संयम नियम, सुचि सोभाग गरब्ब।
नर पैसै वेस्या सदन, बाहिर रहइ सरब्ब।।1।।
मात पिता बंधव सुतन, बैर बहिन अन्न धन्न।
तिण नुं ए वल्लभ नही, जिहि वाल्हो वेस्या तन्न।।2।।
न सुंहावइ तीयनूं बडा, सुणै न हित के बोल।
जो वेस्या सुं प्यालो पीयै, तिणरो केहो तोल।।3।।

सुरापांनी नूं सीष दयइ छै—

दूहा

सुरापांन जो जो करै, सो सब भक्ष करेइ।
दुष पावइ गहिलो हुवइ, पिण फिर पात्र भरेइ।।1।।
काम काज हूंती रहइ, करइ अगमिय गोण।
ज्ञान नष्ट हुइ जाइ सो, नरक पातियो होण।।2।।
जूवइ षेलि दारू पीयै, फिर वेस्या घरि जाइ।
भी परदारा सूं रमइ, च्यारे विनासइ आइ।।3।।

पर स्त्रीरत नूं सीष दयइ छै—

दूहा

जीवा मारै पर त्रीया, पाडै नरकि अघोर।
गमइ वडाई जन हसइ, दुष पावइ घरि अउर।।1।।
बिलीषाइ सुत आंपणउ, सा किम छोडै मांस।
मारै अपणइ षसम कुं, तो नारी कौंण वैसास।।1।।
परत्रीत इ गहि बंधीयइ, अरु धन जांतो जोइ।
ठोड़-ठोड़ संकत रहइ, कलह मृत्यु पिण होइ।।3।।
अप्रिय मैथुन सोचियै, अरु विड केरो साथ।
वुरइ कहत मन सोचियै, सोचिय रहत अनाथ।।4।।
बालापण पढीया नही, योवन व्यर्थ गमाइ।
वृद्ध भयइ कछु होइ नहि, मन पछतावो थाइ।।5।।

वार्ता

ताहरां विष्णुस्वांमि रा च्यार बेटा छा। एरा वचन अवधारि विद्या पढण नुं वणारसी गया।

तेथ केतै एक कालि विद्या पढि आवतां विचारीयउ जो वा विद्या फुरइ कि नही। इसो जांणि जंगळ माहे एक करंक पडीयो दीठउ सीह रौ। तिण नुं प्रथम विद्या कर हाड जोड़िया। बीजै विद्या रइ बलि मांस-पंड कियो। तीजै रोम सहित तुचा कीधी। ताहरा बोलीयो। ईयई नुं जीवाडीयइ मारसी कुण।

तरै चौथऊ बोलीयो। न जीवाडूं तो म्हारी विद्या री षबरि क्युं पडइ। तरै विद्या करि सिंघ जीवाडीयौ।

ताहरां सिंघ भूषो ऊठियो। मुह आगै ऊभो तो तिण नुं मारियो। बीजा नाठा। तरै सिंघ सगळा मिरग भेळा करि षांण लागो।

वेताल पूछीयौ। महाराज इयां पढीयां मांहि महामूरख कुंण।

राजा कहीयउ। पहिली पूछै तिको मूरख, जो इतरो ही न जांणइ। पाछइ पढीया तो च्यारै मूरख। पीण जीयै सिंघ नुं जीवाडियो सो महामूरख।

दूहो

बुद्धि वडी विद्या हुंतइ, धूतावे विण बुद्धि।
बुद्धि विहीना पंडितां, षाधा सिंहइ क्रुद्धि।।1।।

वार्ता

एती राजा रा मुष थी सांभळि मडो डाल जाइ विलगउ। राजा जाइ मडै नुं ले आवतउ हूवउ।

इति श्री वैताल पचीसी री अकवीसमी कथा।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

उल्थौ=अनुवाद, अनुसिरजण। उल्थाकार=अनुवादक, अनुसिरजक। मडै=मुड़दौ, लोथ, शव। सांभळि=सुण्यौ। तीयै=उण। द्युतकारी=जुआरी, द्यूतक्रीड़ा करण वाळौ। तीयां नुं=वांनैं, उणां नैं। जुवारी=जुआरी। शील=चरित्र। लिषमी=लक्ष्मी। वेश्या=छिनाळ। अधम=अधरम। सुभाग=सौभाग्य। विनासइ=विणास। त्रीया=स्त्री, लुगाई। सुत=बेटा। षसम=धणी, पति। बालापण=टाबरपणै, बाळपणै। अवधारी=आतमसात करनै। तेथ=बठै। केत=कित्ता ई, केई। कालि=काळ। विचारीयउ=विचार कर्‌यौ। करंक=कंकाळ। दीठउ=दीख्यौ। सीह=सिंघ, शेर। तुचा=चामड़ी, त्वचा। ताहरां=तद, जणै। बीजा=दूजा, दूसरा। नाठा=भाजग्या, दौड़ग्या। कहीयउ=कैयौ। तिकौ=वौ। क्रुद्धि=रीस में आयोड़ौ, किरोध कर्‌योड़ौ। विलगउ=विलूंबग्यौ। अकवीसमी=इक्कीसवीं।

सवाल

विकळपाऊ पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. 'वैताल पचीसी' रा राजस्थानी उल्थाकार है—

(अ) खेमदान (ब) करणीदान

(स) देईदान (द) सैणीदान

( )

2. 'वैताल-पचीसी' रौ राजस्थानी उल्थौ होयौ तद बीकानेर रा महाराजा कुण हा ?

(अ) अनूपसिंह (ब) करणसिंह

(स) सादूलसिंह (द) गंगासिंह

( )

3. विष्णु स्वामी रै कित्ता बेटा हा ?

(अ) दो (ब) चार

(स) तीन (द) पांच

( )

4. विष्णु स्वामी रा बेटा आपरी विद्या सूं किणनैं जींवतौ करयौ ?

(अ) मिरगै नैं (ब) घोड़ै नैं

(स) सिंघ नैं (द) हाथी नैं

( )

साव छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. 'वैताल पचीसी' री कित्तवीं कथा रौ राजस्थानी उल्थौ पाठ में सामल है ?
2. विष्णु स्वामी रा बेटा विद्या हासल करण सारू कठै गिया हा ?
3. 'वैताल पचीसी' री इण कथा सूं कांई सीख मिळै ?
4. विद्या हासल करण सूं पैलां विष्णु स्वामी रै बेटां में कांई दुर्गुण हा ?

छोटा सवालां रा पड़ूत्तर

1. विष्णु स्वामी रा बेटा आपरी विद्या री पारख किण भांत करी ?
2. विद्या रौ उपयोग करयां पछै च्यारूं भाई कांई फळ पायौ ?
3. विद्या हासल करयां पछै आपनैं सबसूं बत्तौ मूरख किसौ भाई लाग्यौ अर क्यूं ?
4. देईदान नाइता 'वैताल पचीसी' रौ राजस्थानी उल्थौ कठै, कद अर किणरै शासनकाळ में करयौ ?

लेखरूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. विष्णु स्वामी रै च्यारूं बेटां सिंघ नैं किण भांत जीवाड़ै ? विस्तार सूं लिखौ।
2. देईदान नाइता रौ परिचै देवता थकां 'वैताल पचीसी' री इण कथा रै राजस्थानी उल्थै बाबत आपरा विचार लिखौ।
3. 'वैताल पचीसी' री इण कथा रौ सार लिखौ।
4. ''वैताल पचीसी री कथा सीख देवै कै खाली विद्या हासल करण सूं कीं नीं होवै, उणरौ उपयोग सावळ अर बगतसर करणौ चाईजै।'' इण कथन रै पख में आपरा विचार प्रगट करौ।